^vkfne tutkfr dkjok ds l'kfDrdj.k esa ljdkjh ;kstuk,¡ % ,d leyksapukRed v/;;u*

t'kiqj ftyk] NÙkhlx<+; ,oa flemsxk ftyk] >kj[k.M+; ds lanHkZ esaA

ih,p0 Mh0 gsrq ,d 'kks/k izk:i

स्नातकोत्तर मानवविज्ञान विभाग

jkaph fo'ofo|ky;] jkaph

lkekftd foKku ladk;

funs'kd %

Mk- jke dqekj iqlkn
सहायक प्रोफेसर–सह–विभागाध्यक्ष
मानवविज्ञान विभाग,
सिमडेगा कॉलेज, सिमडेगा।

'kks/kkFkhZ %

ikehuk ckMk
मानवविज्ञान विभाग,
सिमडेगा कॉलेज, सिमडेगा।

स्नातकोत्तर मानवविज्ञान विभाग, राँची विश्वविद्यालय,

jkaph] >kj[k.M & 834001-

2024

Hkfedk

प्राचीनकाल से जनजातियाँ संस्कृति के संरक्षक और वाहक के रूप में जानी जाती है।

भारत में कुल 730 जनजातियाँ संविधान में अनुसूचित है जो भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है।

भारत सरकार के द्वारा 5वीं योजना के अर्न्तगत जीवन स्तर के आधार पर 75 जनजातियों को आदिम जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। पूर्व में इन्हें PTGS (प्रीमीटिव ट्राइबल ग्रुप) के नाम से जाना जाता था। अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह में रहनेवाली जारवा, सोम्पेन, सेन्टीनलीस, ओंगे एवं अण्डामांनी, झारखण्ड की असुर बिरजिया, कोरवा, बिरहोर, माल पहाड़िया, असुर इत्यादि,, छत्तीसगढ़ की कमार अबुझमाड़िया, बिरहोर, बैगा ,पहाड़ी कोरवा इत्यादि इस श्रेणी में आते है। वर्तमान में इन्हें PVTGs के नाम से जाना जाता है।

कोरवा एक आदिम जनजाति है जो आधुनिक सभ्यता से कोसों दूर है। इनका निवास स्थान मुख्य रूप से छत्तीसगढ के विलासपुर , रायगढ़ , सुरगुजा एवं झारखण्ड के सिमडेगा तथा पलामू जिला में विद्यमान है। छत्तीसगढ के विलासपुर एवं रायगढ़ में इनकी जनसंख्या सघन नहीं है परन्तु ज”ापुर एवं सुरगुजा जिले में इनकी सघन आबादी है। ज”ापुर जिले के बनग्राम सरकरा एवं विदुरपुर तथा फरसाबहार ब्लॉक, छुर्रा, पण्डरापाट, कु”ामी, मनोरा, सन्ना इत्यादि एवं इस आस–पास के पाट आते हैं। जहाँ इनकी जनसंख्या लगभग 1,29,429 है।

इसी प्रकार झारखण्ड के पलामू एवं सिमडेगा जिला इनका मुख्य निवास भूमि है। सिमडेगा जिला का पश्चिमी भाग जो छत्तीसगढ़ से सटा है अर्थात बड़कीविउरा राजस्व ग्राम के अर्न्तगत रावणखोता, सरईपानी, डोंगापानी, उरूमकेला, मुरूमकेला इत्यादि।

गड़ियाजोर राजस्व ग्राम के अर्न्तगत कालोमुण्डा, कोलमुण्डा तथा भलमुण्डा खिण्डा के अर्न्तगत परतापुर तथा टाँगरटोली ,चड़रीमुण्ड़ा।

कुटमाकच्छार के अर्न्तगत मुड़म्बा, झीमरी में इनकी जनसंख्या लगभग 1131 है। जबकि झारखण्ड में इनकी जनसंख्या 35606 है।

प्रस्तुत शोध कोरवा जनजाति के स”ाक्तिकरण में जो सरकारी योजनाँए जैसे– बिरसा आवास, ि”ाक्षा एवं कौ”ाल विकास, स्वास्थय एवं पोषण, आजीविका मि”ान, अन्त्योदय योजना इत्यादि चल रही हैं उसका एक समलोचनात्मक अध्ययन के माध्यम से कोरवा जनजाति एवं इस तरह के अन्य आदिम जनजातियों की सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगा ताकि राष्ट्र समृद्ध हो सके।

dksjok tutkfr dk lf{kIr ifjp;

कोरवा अपनी उत्पति छत्तीसगढ़ के खुड़िया घाटी को मानते हैं, जहाँ खुड़िया रानी का निवास है।

पहाड़ी कोरवा पहाड़ियों के ऊपर या तराई क्षेत्र में निवास करते हैं जबकि डिहारी कोरवा समतल भूमि पर पाई जाती है। समतल भूमि में अन्य लोग भी निवास करते हैं जिनके साथ इनके सांस्कृतिक सम्पर्क हुए हैं परिणामतः इनके जीवन में कुछ सुधार हुए हैं, परंतु पहाड़ी कोरवा पृथकतावादी मानसिकता के कारण अब भी काफी पिछड़े हुए हैं। शिकार, खाद्य संग्रहण इनका मुख्य पेशा है अर्थात् पूर्णरूपेण जंगल पर आधारित हैं। जंगल के अतिरिक्त स्वंय के लिए अन्य खाद्य उत्पादन प्रौद्योगिकी का नहीं होना पिछड़ापन का एक बड़ा कारण है।

कोरवा जनजाति के उत्पत्ति का कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। दन्तकथाओं के आधार पर कुछ निम्नलिखित किवदन्तियाँ उपलब्ध है–

1. कुछ कोरवा के अनुसार राम ,सीता और लक्ष्मण अपने बनवास की अवधि में सुरगुजा में रूके थे एवं अपनी की गई खेती की सुरक्षा हेतु एक पुतला बनाया, सीता जी ने श्रीराम से आग्रह कर उस पुतले में जीवन दिला दिया – जिस व्यक्ति का नाम कोरवा रखा गया– यही उनका पूर्वज था।

2. कोरवा अपने पूर्वज शिव भगवान को मानते हैं उनका कहना है कि शिव और पार्वती जंगल में निवास करते थे एवं उन्होंने जंगल काट कर जलाया जिसे डाही कहा जाता है उसके पश्चात् उन्होंने खेती की, जिसकी रक्षा के लिए मिट्टी से एक व्यक्ति बनाया। पार्वती के जिद करने पर शिव जी ने उसमें प्राण डाल दिया तथा उसके हाथ में एक तीर धनुष दे दिया। वह व्यक्ति को–रावा, को–रावा चिल्लाकर खेती की रक्षा करने लगा। को–रावा का अर्थ कोरवाई बोली में कौन है? कौन है? होता है। इसी शब्द को–रावा से कोरवा की उत्पति हुई। इसके दो पुत्र हुए। एक पुत्र पहाड़ पर रहा जो पहाड़ी कोरवा के नाम से जाना जाता है तथा दूसरा पुत्र जो डाही जलाकर कृषि करना शुरू किया उसे डिहारी कोरवा कहा गया।

कोरवा प्रोटोआस्ट्रॅलॉयड प्रजाति समूह से संबंधित है। कद मध्यम, शरीर का रंग–गहरा भूरा तथा बाल लहरदार से घुंघराले होते हैं।

इनकी बोली कोरवाई कहलाती है जो ऑस्ट्रॉएशियाटिक भाषा समूह की मुण्डा भाषा से निकली है।

- igukok vk<kok ÷ सामान्य दिनों में पुरूष कमर में लुंगी, धोती लपेटते हैं एवं शरीर का अन्य भाग खुला रहता है। महिलाएं एक ही साड़ी से शरीर का उपरी भाग भी ढंक लेती है। शादी–विवाह या अन्य अवसरों पर पुरूष शर्ट या गंजी तथा स्त्रियाँ ब्लाउज पहनती है।
- lkekftd thou ÷ आदिम जनजति कोरवा के सामाजिक जीवन के अंतर्गत अनेक प्रकार के संस्कार सन्निहित हैं। ये शिकारी जनजाति है। बच्चे के जन्म के समय बच्चा की नाभी तीर से काटी जाती है जबकि बच्ची की नाभी चाकू से काटने का प्रावधान है। नाभी झड़ जाने के पश्चात छठी किया जाता है। घर में सामग्री होने पर इस्ट–कुटुम्ब को बुलाकर चावल से बना मादक पेय पदार्थ पिलाया जाता है। विवाह अल्प वयस्क आयु मे ंकर दी जाती है।

- vkfFkd thou ÷ पहाड़ी कोरवा जंगल पर आधारित शिकार करना एंव फल–फूल , कंद मुल तथा विभिन्न प्रकार के जंगली उत्पादन के माध्यम से आपनी जीविका चलाते हैं। पहाड़ी कोरवा वृक्ष की पत्तियों से दोना पत्तल एंव मोहलन के पत्तों से पेटिका एंव वर्षा से बचने के लिए गुंगु का निर्माण करते हैं तथा डिहारी कोरवा खेती करते हैं खेती के साथ–साथ कृषक मजदुर के रूप में भी अपनी सेवाएं देते हैं। सरकरा एंव विदुरपुर जो बनग्राम घोषित हैं उन्हें सरकार के द्वारा 12.5 एकड़ जमीन प्रत्येक परिवार को दी गई थी। परंतु वर्त्तमान में वे इनमें खेती करना पसंद नहीं करते।

- Hkkstu :– भोजन में चावल, उरद दाल एंव कोसना (चावल से बना मादक पेय पदार्थ) मछली या कोई मांस इनके भोजन में अवश्य शामिल होता है। अनेक प्रकार की पत्तियां जैसे– सहजन, चकोड़, सरला इत्यादि को सुखाकर उसका चूर्ण बनाकर चावल के मांड़ के साथ पकाकर खाया जाता है।

- Ekukjatu :–हड़िया जिसे कोसना कहा जाता है– इनका पसंदीदा पेय पदार्थ है जो नशा युक्त होता है। शाम को इस पदार्थ का सेवन कर नाच–गान करते हैं।

- /kez :– सिगिर देव एंव खुड़िया रानी इनके मुख्य अराध्य हैं। सिगिरदेव का वास जंगल में होता है, अतः उनकी पूजा जंगल में किया करते हैं।

घर के अंदर अपने मृत पूर्वजों की छाया स्थापित करते हैं जिसे भीतर घर की संज्ञा दी गई है। विभिन्न अवसरों पर पूर्वजों के द्वारा प्रतिस्थापित परम्पराओं का निर्वहन करते हुए विधि विधान से पूजा अराधना करते हैं। काला जादू पर अटूट विश्वास है इसके तहत विभिन्न प्रकार के अंधविश्वास इनके बीच पाए जाते हैं।

- **jktuhfrd thou** :– इनकी जाति की अपनी अलग पंचायत होती है। प्राचीन समाज में जिस प्रकार बैंड एंव ट्राइब थे उसी प्रकार वर्त्तमान में भी इनका एक छोटा झुंड एंव उससे बड़ा जिसमें कई झुंड मिले होते हैं । प्रत्येक झुंड में चार व्यक्ति विशेष होते हैं
    - एक :– धार्मिक विशेषज्ञ (पूजा करनेवाला व्यक्ति)
    - दूसरा :– धार्मिक विशेषज्ञ का सहयोगी।
    - तीसरा :– प्रशासनिक प्रमुख एंव उसका सहयोगी। अपने झुंड या टोले में किसी प्रकार की समस्या आती है तब ये उस पर निर्णय लेते हैं साधारणता ये समस्याएँ घरेलु झगड़े, मारपीट एंव अंध वि”वास – डायन प्रथा से संबंधित होते हैं, इस फैसले से संतुष्ट नहीं होने पर वृहद समाज अर्थात् ट्राइब में पुनः फैसला के लिए आग्रह करते हैं, फैसले में जिस व्यक्ति को दोषी ठहराया जाता है वह मादक पेय पदार्थ का प्रबंध करता है।
    - चौथा – यह व्यक्ति प्रशासनिक प्रमुख का सहयोगी होता है जो लोगों को बैठक की जानकारी देता है।

1- iwoZ esa fd, x, v/;;u

1. ई0 टी0 डाल्टन (1872) ने 'डिस्क्रीपटीभ इथनोलॉजी ऑफ बंगाल' नामक अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक में इन्हें कॉलेरियन ट्राइब की संज्ञा दी है। जिसमें उन्होने उनके रीति–रिवाजों, परम्पराओं और जीवन शैली – के संदर्भ में वर्गीकृत और वर्णित किया है।

2. ए0 एन0 सन्डवार (1976) ने अपनी पुस्तक 'द कोरवा ट्राइब – देयर सोसाइटी एंड इकोनोमी' नामक पुस्तक में आदिम जनजाति कोरवा के सामाजिक एंव आर्थिक पक्ष का विवरण दिया है। जिसमें उन्होंने कोरवा जनजाति के पारम्परिक जीवन धार्मिक वि”वास और आर्थिक गतिविधियों पर प्रका”ा डाला है। साथ ही साथ कोरवा जनजाति की ि”क्षा और स्वास्थ्य पर विकास करने वाली सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयासों का जिक्र किया है।

3. शशी शेखर गोपाल देवगाँवकर (1986) ने 'द हिल कोरवा' नामक अपनी पुस्तक में कोरवा जनजाति की भौतिक संस्कृति, परिवार, विवाह, नातेदारी धर्म इत्यादि का अध्ययन किया है।

4. याज्ञवल्य शुक्ला एंव लाल जी0 एस0 एन0 शाहदेव ने 'स्ट्रगल फोर एकजिसन्टेस' नामक आलेख में कोरवा जाति का संक्षिप्त परिचय दिया है।

5. प्रकाश चन्द्र उराँव– जनजातीय शोध संस्थान राँची (2003) द्वारा पुस्तक 'द लैंड एन्ड पीपल्स ऑफ झारखण्ड' में कोरवा जनजाति की भौतिक संस्कृति, जन्म संस्कार, गोत्र, नातेदारी, विवाह, धर्म, अर्थव्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था की अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।
6. एल• पी• विद्यार्थी एवं वी• के• राय (1976) 'द ट्राइबल कल्चर ऑफ इन्डिया' नामक पुस्तक में जनजातिय संस्कृति, आर्थिक प्रणाली, धार्मिक जीवन, लोककला का विवरण प्रस्तुत किया गया है।
7. डी• एन• मजुमदार एवं टी• एन मदन (1985) 'सामाजिक मानवशास्त्र परिचय ' नामक पुस्तक में जनजातीय समूह की संस्कृति एवं सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक पक्षों को उद्धृत किया गया है।
8. शुक्ल हीरालाल, मिश्र रमेन्द्र नाथ एवं अन्य के द्वारा रचित समग्र छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर से प्रकाशित (2017) पृष्ठ संख्या 518 में कोरवा जनजाति का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने इस जनजाति के सामाजिक ढ़ाचे, रीति–रिवाज, धार्मिक वि"वास और आर्थिक गतिविधियों का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होने इनके ि"ाक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक विकास के मुद्दों पर भी चर्चा की गई है।
9. रसल आर• वी• एवं हीरालाल ने 'दी ट्राइब एन्ड कास्ट ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविंस ऑफ इंडिया' भाग 3 में कोरवा आदिम जनजाति का परिचय प्रस्तुत किया गया है। जिसमें उन्होंने उनके सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक पक्षों का वर्णन किया है।
10. एस• एस• सरकार (1949) 'द अबोरजीनल रेसेस ऑफ इन्डिया ' के द्वारा कोरवा जनजाति के रक्त समूह (ABO) का अध्ययन किया गया है।
11. आर• भी• रसेल तथा राय बहादूर हीरा लाल ने – 'Korwa Tribe of Central India ' (1916) में – समेकित अध्ययन प्रस्तुत किया है।
12. श्यामलाल ने 'The Hill Korwa' (1984) में इनकी परम्परागत पे"ाओं और वर्तमान में इनकी चुनौतियों पर प्रका"ा डाला है।
13. जी• एस• राय ने 'Economic and Social Development of Primitive Tribes in India' (1990) में इनकी द"ाा को ध्यान में रखते हुए आर्थिक उन्नयन को ध्यान में रखा है।
14. बी• एन• सरस्वती ने 'Tribal Culture, Continuity and Changes ' (1997) में सास्कृतिक निरन्तरता पर प्रका"ा डाला है।

15. आर• आर• प्रसाद ने ‘Ethnographic Atlas of Indian Tribes’ संस्पादित (1996) में विभिन्न जनजातियों के साथ कोरवा जनजाति का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है।

2- leL;k dk dFku ,oa 'kks/k 'kh"kZd

प्रस्तुत शोध में आदिम जनजाति कोरवा के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक सांस्कृतिक पक्षों को उजागर करते हुए विकास में बाधक कारकों एवं सरकारी योजनाओं के क्रियान्व्यन को ध्यान में रखते हुए एक समलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा। शोध का शीर्षक निम्नांकित हैं

^^vkfne tutkfr dksjok dk l'kDrhdj.k esa ljdkjh ;kstuk,a % ,d leykspukRed v/;;uß

3- 'kks/k mís';

आदिम जनजाति कोरवा स्वभावतः पर्वतीय एवं तराई क्षेत्रों में निवास करते हैं। स्वभावतः पृथकतवादी जिंदगी जीना इनकी संस्कृति में है। दूसरों के सम्पर्क में नहीं आ पाने के कारण संस्कृतिकरण या परसंस्कृतिग्रहण की क्रिया नहीं हो पा रही है। फलतः इनकी दशा लगभग यथावत बनी हुई है जबकि भारत की कुल 730 जनजातियों के लिए संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों यथा 15 (4), 16 (4), 19 (4), 29, 46, 146, 275, 399,: 5 वीं एवं 6 वी अनुसूची के माध्यम से सुरक्षा एवं विकास के प्रावधान किए गए हैं । विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएं एवं नीति आयोग के द्वारा राशि आवंटित किए जाने के पश्चात् भी अपेक्षित लाभ नहीं मिला है। इनकी दशा नहीं सुधरने के पीछे कौन से कारक उत्तरदायी है? तथा उसके अनुसार सुझाव प्रस्तुत करना होगा। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन के उद्देश्य –निम्नाकिंत हैः –

(i) सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक पक्षों का अध्ययन ।

(ii) सशक्तिकरण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का अध्ययन करना ।

(iii) क्रियान्व्यन से जुड़ी हुई समस्याओं का अध्ययन करना ।

(iv) समस्या के निराकरण हेतु उपायों का अध्ययन करना ।

4- midYiuk

(i) आदिम जनजाति कोरवा में शिक्षा का प्रादुर्भाव नगण्य है।

(ii) आदिम जनजाति कोरवा के विकास में अन्धविश्वास बाधक है।

(iii) आदिम जनजाति के कोरवा के सशक्तिकरण हेतु उनकी संस्कृति के अनुसार योजनाएँ क्रियान्वित नहीं है।

(iv) सरकारी योजनाओं का सतत निरीक्षण से उनकी सशक्तिकरण में अपेक्षित लाभ होगा।

5- 'kks/k izk:i ,oa fof/k;k¡

उपयुर्क्त शोध अध्ययन का आधार गुणात्मक शोध है, जिसकी व्याख्या साक्षात्कार से अवलोकन के साथ–साथ सर्वेक्षण विधि के माध्यम से आँकड़ों को संग्रहित किया जाएगा। साथ ही उद्देश्य को ध्यान में रखकर अनुसूचि का प्रयोग किया जाएगा। इस शोध का अध्ययन क्षेत्र छत्तीसगढ़ का जशपुर जिला एवं झारखण्ड राज्य का सिमडेगा जिला है जिसका प्रतिदर्श इन क्षेत्रों में अवस्थित है।

<u>'kks/k izk:i</u>

– जनसंख्या
– सैम्पल–निर्दशन
– टूल्स

6- vka¡dM+ksa ds Jksr

उपर्युक्त शोध अध्ययन के आँकड़े के संग्रहण के लिए आँकड़ों के प्राथमिक एवं द्वैतियक आंकड़ो के स्त्रोतो का प्रयोग किया जाएगा। साथ ही विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रश्नावली या अनुसूची का निर्माण किया जाएगा।

7- vka¡dM+ksa dk fo'ys"k.k

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से प्राप्त आँकड़े का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विधियों के माध्यम से विष्लेषण किया जाएगा। साथ ही साथ सांख्यिकीय तकनीकों एवं विधियों से प्राप्त आकड़ों का प्रस्तुतीकरण निम्न तकनीक से किया जाएगा।

वृत्तआरेख

सारणीयन ____ प्रस्तुतीकरण तकनीक

दंडाआरेख

रेखीय आरेख

केन्द्रिय प्रवृति के मान

शोध उद्देश्य के आधार पर प्रस्तुतीकरण

8- 'kks/k dk vkfpR; ,o oÙkZeku 'kks/k dh vko';drk

विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं तथा वर्त्तमान में नीति आयोग के द्वारा आदिम जनजाति के उत्थान हेतु प्रस्तावित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्व्यन हेतु राशि आंवटित किए जा चुके परन्तु वर्त्तमान परिदृश्य में अपेक्षित विकास दिखाई नहीं पड़ता।

आदिम जनजाति कोरवा के उत्थान हेतु बिरसा आवास, खाद्यान्न योजना, अन्त्योदय योजना, शिक्षा के क्षेत्रों में छात्रवृत्ति, एकलव्य विद्यालय, मुफ्त पाठ्य पुस्तक, मध्याह्न भोजन इत्यादि अनेक योजनाएं क्रियान्वित हैं परन्तु स्थिति में लाभ नहीं हुआ है। इसका कारण इनकी संस्कृति के साथ योजनाओं का समावेषण नहीं होना भी हो सकता है।

इस शोध विषय के माध्यम से विकास में बाधक एंव अवरोध पैदा करनेवाले को समझना तथा उनके समाधान के विभिन्न उपायों का अध्ययन करना। ये उपाय आदिम जनजाति कोरवा के लिए विभिन्न योजनाओं के निर्माण एंव क्रियान्वयन में सहायक होगी।

9- v/;;u dh lkFkZdrk ,oa lekt dk ykHk

आदिम जनजाति कोरवा स्वभावतः जंगली क्षेत्र एवं तराई क्षेत्रों में निवास करते हैं। अन्य लोगों से इनका मिलना–जुलना नहीं हो पाता। इनकी पृथकतावादी विचार के कारण इनकी संस्कृति लगभग स्थिर है। जबकि संस्कृति गतिशील होती है। संस्कृति सीखी जाती है। दूसरों के सम्पर्क में नहीं आ पाने के कारण इनकी भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आए हैं। अनेक योजनाएं चलाई गई है पर अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाया है। विकासशील राष्ट्र को विकसित देश एवं राष्ट्र की समृद्धि में प्रत्येंक देशवासी की सहभागिता

आव"यक है। जनजातियों का एक खण्ड जिन्होंने पी•भी•टी•जी•एस• वर्ग में रखा गया है, यदि वे अन्य देशवासियों के साथ–साथ न चल पाने की स्थिति में हों तो देश की समृद्धि प्रभावित होगी। इस प्रकार के अध्ययन न सिर्फ आदिम जनजाति कोरवा के लिए लाभदायी होगी अपितु देश की समृद्धि में भी सहायक होगा।

10- v/;;u dk ykHk

भारत में 730 जनजातियां हैं जो भारतीय जनसंख्या का 8.6 प्रति"ात है। इनमें से 75 जनजातियों को आदिम जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। इनके विकास एंव इनकी समृद्धि हेतु स्वतंत्रता प्राप्ति के प"चात से ही प्रयास किए जाते रहे है। वर्त्तमान में पूर्व बजट की तुलना का 12.32 प्रतिशत वृद्धि जनजातियां कल्याण हेतु की गई।

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि में शिक्षा रीढ़ की हड्डी की तरह होती है। शिक्षा को केन्द्र में रखकर जनजातियां एंव आदिम जनजाति सदस्यों के लिए छात्रवृत्ति, मुफ्त पाठ्य पुस्तक, मध्याह्न भोजन, एकलव्य विद्यालय एंव जनजातिय शिक्षार्थियों के लिए मुफ्त आवास, भोजन देने के प्रावधान किए गए हैं। इसी प्रकार शिक्षा प्राप्त कर चुके लोगों के लिए कौशल विकास एंव अन्य प्रशिक्षण मुफ्त में दिए जाने का प्रावधान किया गया है।

इसी प्रकार कृषक, मजदुर, जंगल आधारित व्यवसाय से सम्बधित परिवारों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं।

स्वास्थ्य ही धन है। स्वास्थ्य व्यक्ति देश की समृद्धि में सहायक होता है अतः स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार की योजनाएं जैसे– ICDS , मुफ्त पोषाहार , जननी सुरक्षा क्रियान्वित हैं। वर्त्तमान में उन्हें आयुषमान कार्ड के द्वारा 5 लाख तक की स्वास्थ्य सुविधा दी गई है।

राष्ट्र की राशि का एक बड़ा भाग अनुदान में खर्च होते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी उत्पादकता बढ़ा ले तो देश की सकल आय में अवश्य वृद्धि होगी।

इस प्रकार का अध्ययन लोगों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

11. Hkfo"; ds ifjis{; ls ykHk

भविष्य के पुर्ननिर्माण में शोध का महत्व अत्याधिक है। मानव विज्ञान के शोध भारत को विश्व के विकसित देशों समतुल्य रखने को आतुर है। मानवविज्ञान जिसे अमेरिकी मानवशास्त्रीयों ने कल्चरोलोजी की संज्ञा इसलिए दी थी क्योंकि इस विज्ञान के माध्यम से लोगों के सम्यक अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रकार के अध्ययन के लाभ निम्नांकित है–

(1) जनजातीय कल्याण से संबंधित अध्ययन को प्रोत्साहित करेगा।

(2) जनजातीय कल्याण से संबंधित योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में लाभकारी होगा।

(3) इस प्रकार के शोध के माध्यम से जनजातियों के मूल में जाया जाता है। तथा जो प्रतिवेदन तैयार किए जाते हैं, उनकी प्रासंगिकता बनी रहती है।

v/;;u dk {ks=

जशपुर जिले के फरसाबहार विकास खण्ड का सरकरा जहां लगभग 42 परिवार तथा विदुरपुर के 22 परिवार तथा झारखण्ड के सिमडेगा जिला का कुरडेग प्रखण्ड जहां लगभग 127 परिवार निवास करते हैं। इस प्रकार लगभग 191 परिवार पर अध्ययन केन्द्रित होगा।

12- v/;k;ksa dh :ijs[kk

^^vkfne tutkfr dkjok ds l'kDrhdj.k esa ljdkjh ;kstuk,¡ % ,d leykspukRed v/;;u^^

भूमिका – कोरवा जनजाति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाएगा।

अध्याय 01 – क्षेत्र का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया जाएगा।

अध्याय 02 – सामाजिक एवं आर्थिक पक्षों का अध्ययन ।

अध्याय 03 – धार्मिक एवं राजनैतिक पक्षों का अध्ययन।

अध्याय 04 – सशक्तिकरण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का अध्ययन

- केन्द्र द्वारा सम्पोषित कार्यक्रम
- राज्य सरकार द्वारा सम्पोषित कार्यक्रम
- गैर सरकारी के अंतर्गत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम

अध्याय 05 – क्रियान्वयन से जुड़ी हुई समस्याओं का अध्ययन

(सरकारी यथा– केन्द्र एवं राज्य सरकार के कार्यक्रम से जुड़ी समस्याएँ)

(गैर सरकारी यथा– राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय योजनाओं से जुड़ी समस्याएँ)

समस्याओं की पहचान

आंकड़ों के माध्यम से समस्याओं का प्रस्तुतीकारण

अध्याय 06 – समस्याओं के निराकरण हेतु उपायों का अध्ययन करना। अध्याय 07 – उपसंहार एवं मंतव्य

संदर्भ ग्रंथों की सूची।

परिशिष्ट – मानचित्र

फोटो

वैयक्तिक अध्ययन

स्थानीय शब्दावली

13- lanHkZ xzUFkksa dh lwph

1. Chaudhuri, B. (1982) ‘Primitive tribes in Contemporary India: Concept, Ethnography and Demography’. Mittal publications, New Delhi.

2. Kumar, Narayan (1989) ‘कोरवा जनजाति की सामाजिक स्थिति का अध्ययन ’ भारतीय जनजातीय अध्ययन संस्थान, भोपाल।

3. Kumar, Shailendra (2017) ‘कोरवा जनजातिः बदलती सामाजिक संरचना।’ ट्राइबल कल्चरल रिर्सच सेन्टर, रायपुर।

4. Mishra, Arun Kumar (1997) 'कोरवा जनजातिः सास्कृतिक अध्ययन' राष्ट्रीय जनजाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान, रायपुर।
5. Mishra, Govind Prasad (2012) 'कोरवा जनजाति की जीवन शैली और चुनौतियाँ ' आदिवासी शोध संस्थान, झारखण्ड।
6. Prasad, R.R.(1996) 'Ethnographic Atlas of Indian tribes'. Discovery publishing House, New Delhi'.
7. Rai, G.S. (1990) 'Economic and Social Development of primitive tribes in India'. Common Wealth publishers, New Delhi.
8. Raths Govind Chandra (2006) 'Tribal Development in India: The Contemporary Debate'. Sage publications, New Delhi.
9. Russell, R.V. & Hira Lal, Rai Bahadur (1916)'The tribes and castes of the Central provinces of India' Macmillion & co. London.
10. Sangha, R.D. (1983) 'The forgotten tribes of India: A study of some of the primitive tribes of Madhya Pradesh' Sterling publishers, New Delhi
11. Saraswati, Baidhyanath (1997) 'Tribal Culture, Continuity and Change'. Indira Gandhi National Centre of the Arts, New Delhi.
12. Shyamlal (1984) 'The Hill Korwa'. Anthropological survey of India, Calcutta.
13. Singh K.S. (1994) 'People of India : Madhya Pradesh' Anthropological survey of India.Seagull Books, Calcutta.
14. Tiwari, Shivanand (2002) 'कोरवा जनजाति का आर्थिक जीवन' अनुसंधान केन्द्र, पटना।
15. Tripathy, Dr Radheshyam (2005) ' कोरवा जनजाति का परम्परागत ज्ञान और चिकित्सा पद्धतियाँ '। जनजाति कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़।
16. Tripathy, Dr. B. K. (2014) ' कोरवा जनजाति के धार्मिक वि"वास और परम्पराएँ'। भारतीय जनजातीय समाज अध्ययन संस्थान, भोपाल।
17. Verma, Maheshwar Prasad (2010) ' कोरवा जनजातिः एक मानव"ाास्त्रीय अध्ययन ' वाणी प्रका"ान, दिल्ली।

Time Frame

Library work 2 Months

Field work	8 Months
Preparation of Draft	3 Months
After Correction Revision – to field	2 Months
Preparation of Draft	3 Months
After Correction preparation of Final Draft	2 Months
List/Typing/Binding/submission	4 Months